भारतीय कृषि यंत्रीकरण के गेमचेंजर्स

जी एस ग्रेवाल
प्रबंध निदेशक,
कुबोटा इंडिया

जब हमने (कुबोटा) 2008 में कॉम्पैक्ट और हल्के वजन वाले 4–व्हील ड्राइव ट्रैक्टरों के साथ भारतीय बाजार में प्रवेश किया, तो हमने ऐसी टिप्पणियां सुनीं–''ये ट्रैक्टर भारत में काम नहीं करेंगे'', ''भारतीय ग्राहक भारी वजन, कम लागत वाले, 2–व्हील ड्राइव ट्रैक्टर चाहते हैं'', ''इन महंगे 4–व्हील ड्राइव कॉम्पैक्ट (छोटे) ट्रैक्टर को कौन खरीदेगा''। उस समय बाजार में मुख्य रूप से हैवी–वेट, 2–व्हील ड्राइव ट्रैक्टर और मिड–एचपी सेगमेंट में 4–व्हील ड्राइव ट्रैक्टर नहीं थे। हाई स्पेक कॉम्पैक्ट ट्रैक्टर्स का सेगमेंट मौजूद नहीं था। ऐसा लगता था कि हम जो कर रहे थे उद्योग उससे बहुत अलग कुछ कर रहे थे। फिर से राइस ट्रांसप्लांटर्स के मामले में, कृषक समुदाय में यह धारणा थी कि वे सफल नहीं हैं, निम्न गुणवत्ता वाले आयातित ट्रांसप्लांटर्स जिनकी उत्तरी बाजार में बाढ़ आ गई थी और उम्मीद के मुताबिक काम नहीं कर रहे थे। यह हमारे द्वारा कुबोता राइस ट्रांसप्लांटर्स को लॉन्च करने से ठीक पहले की बात है, जो जापानी तकनीक पर आधारित थे।

हमारे तीसरे उत्पाद –ट्रैक टाइप हार्वेस्टर्स का दक्षिण भारत में बहुत सीमित बाजार था, जिसमें मुख्य रूप से एक ही ब्रांड का वर्चस्व था। कई किसानों को आर्द्रभूमि क्षेत्रों में पारंपरिक ट्रैक्टर ऑन टॉप (टीओटी) हार्वेस्टर का उपयोग करके धान की कटाई करने में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा था। इसके बावजूद किसी नए ब्रांड के लिए इस बाजार में स्थापित होना और विस्तार करना आसान नहीं था।

इस स्थिति में मुझे कैथरीन देवरे का उद्धरण याद आया ''व्यवसाय में छह सबसे महंगे शब्द हैं: हमने हमेशा इसी तरह किया है''। इसलिए हमने कृषि यंत्रीकरण के पारंपरिक तरीकों से परे देखने और भारतीय कृषि के लिए इन आधुनिक कृषि यंत्रों को पेश करने को एक चुनौती के रूप में लिया। अन्य प्रतियोगी क्या कर रहे थे, इस पर ध्यान देने के बजाय, हमने भारतीय किसानों की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित किया। हमने अपने ग्राहक पर ध्यान केंद्रित किया।

हमने पाया कि हैंड हेल्ड स्प्रेयर या ट्रैक्टर माउंटेड स्प्रेयर के उपयोग से फसल सुरक्षा की अपनी सीमाएं हैं। मैनुअल छिड़काव गतिविधि में सीमित और असमान कवरेज था जो उपज पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। एक तरफ ट्रैक्टर पर लगे स्प्रेयर पारंपरिक ट्रैक्टरों के बड़े आकार के कारण खेत में प्रवेश करने में सीमित होते हैं।

संकीर्ण और कॉम्पैक्ट कुबोटा बी–श्रृंखला ट्रैक्टरों का उपयोग करके किसान अंगूर और अनार जैसी बागवानी फसलों के बीच संकीर्ण पंक्तियों में प्रवेश कर सकते हैं। कॉम्पैक्ट ट्रैक्टरों की पंक्ति फसलों में प्रवेश करने के लिए संकीर्ण चौड़ाई थी जहां बड़े ट्रैक्टर प्रवेश नहीं कर सकते थे। गन्ने में 4 फीट पंक्ति रिक्ति के आगमन के साथ, ग्राहक हमारे कुबोटा ए211एन संकीर्ण ट्रैक्टर का उपयोग कर सकते हैं, जो इंटरकल्चर संचालन करने के लिए 3 फीट से कम चौड़ा है।

जल्द ही ग्राहक समझ गए कि कैसे नई तकनीक के उत्पाद खेती की गतिविधियों को संचालित करने में मदद कर सकते हैं जो पारंपरिक ट्रैक्टरों का उपयोग करना काफी कठिन था। यह गन्ना, कपास, अनार और अंगूर के बागों जैसी पंक्तिबद्ध फसलें करने वाले किसानों के लिए बड़ा वरदान था। कॉम्पैक्ट आकार के बावजूद उच्च पीटीओ शक्ति ने ग्राहकों को उच्च क्षमता, कम मात्रा वाले स्प्रेयर का उपयोग करने में मदद की जिससे उत्पादकता बढ़ाने में मदद मिली और यहां तक कि नासिक जैसे प्रमुख अंगूर उत्पादक जिलों से अंगूर का रिकॉर्ड निर्यात हुआ।

हमारे हल्के वजन के 4–पहिया ट्रैक्टर पिंजरे–पहियों के बिना काम कर सकते थे, जिससे मिट्टी की संरचना और उप–मृदा को नुकसान से बचाने में मदद मिली। हल्के वजन वाले ट्रैक्टर एक चक्कर में पडलिंग ऑपरेशन कर सकते हैं, जबकि पिंजरे–पहियों वाले भारी ट्रैक्टर का उपयोग करके 3–4 चक्कर लगते हैं। तटीय चावल के बेल्ट में ग्राहकों द्वारा इसकी बहुत सराहना की गई जहां

पारंपरिक भारी वजन वाले ट्रैक्टर मिट्टी में फंस जाते थे और ऐसी घटनाओं से घातक दुर्घटनाएं भी होती थीं।

ग्रामीण रोजगार गारंटी योजनाओं और बढ़ते शहरीकरण के साथ शारीरिक श्रम की लागत बढ़ रही है, जो न केवल खेती की लागत को प्रभावित करेगी, बल्कि महत्वपूर्ण मौसम की आवश्यकता के दौरान श्रम की समय पर उपलब्धता भी प्रभावित करेगी।

उत्तरी क्षेत्रों के किसान, विशेष रूप से पंजाब, धान की रोपाई के चरम मौसम के दौरान श्रमिकों की इस गंभीर कमी से जूझ रहे थे। पंजाब में किसानों को धान रोपने वालों के लाभों को समझने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए काफी प्रयास किए गए। अंत में उन्हें समझ में आया कि कुबोटा राइस ट्रांसप्लान्टर्स न केवल तकनीक में अद्वितीय हैं, बल्कि उन्हें खेतिहर मजदूरों की बढ़ती मांग के प्रबंधन की परेशानी से भी बचाते हैं।

ट्रैक–टाइप हार्वेस्टर के मामले में, हम पूर्वी राज्यों में नए बाजार बना सकते हैं, जहां किसान गीली भूमि में धान की कटाई के लिए संघर्ष कर रहे थे। जल्द ही यह कुबोटा हार्वेस्टर (हार्वेस्किंग) के लिए सबसे बड़े बाजारों में से एक बन गया। हार्वेस्किंग के हल्के वजन और इसकी आसान गतिशीलता की किसानों और कृषि ठेकेदारों ने बहुत सराहना की।

हमने यह भी सुनिश्चित किया कि ग्राहकों को शीघ्र सेवा और स्पेयर पार्ट्स की सहायता मिल सके, जो पहले कई आयातित मशीनों के साथ एक प्रमुख मुद्दा था। हमारा ध्येय (विजन) ''बेजोड़ ग्राहक अनुभव'' प्रदान करना है।

इसने हमें ट्रैक–टाइप हार्वेस्टर और राइस ट्रांसप्लांटर्स की बिक्री में लगातार 5 वर्षों से अधिक समय तक नंबर 1 ब्रांड बनने के लिए सभी तरह से आगे बढ़ाया है।

हम समझ गए कि जब तक हम संपूर्ण कृषि कार्यों को यंत्रीकृत करने का समग्र दृष्टिकोण नहीं अपनाते, तब तक अनाज का सबसे बड़ा उत्पादक बनने का लक्ष्य हासिल करना मुश्किल हो सकता है। भारत में चावल की खेती के तहत दुनिया में सबसे बड़ा भूमि क्षेत्र है, लेकिन जहां तक चावल उत्पादन का संबंध है, हम दूसरे नंबर पर हैं। कृषि गतिविधि की एकरूपता को कृषि श्रम के उपयोग से सुनिश्चित नहीं किया जा सकता है, जिससे असमान फसल और पौधों की वृद्धि होती है। जरूरत सिर्फ जमीन की तैयारी की नहीं बल्कि पूरे फसल चक्र के यंत्रीकरण को देखते हुए खेत की पैदावार बढ़ाने की है।

चावल की रोपाई, छिड़काव, फसल की कटाई जैसी गतिविधियों के लिए संपूर्ण समाधान प्रदाता होने के इस गेम–चेंजिंग दृष्टिकोण ने कुबोटा को भारत में एक सम्मानित और विश्वसनीय ब्रांड बनने में मदद की है।

अतः आधुनिक खेती के लिये चार व्हील ट्रैक्टर और धान ट्रांस्प्लान्टर जैसे उन्नत कृषि यन्त्रों को अपनाने की आवश्यकता है ताकि सघन श्रम गतिविधियों के लिये श्रमिकों पर निर्भरता को कम कर सकें. इनकी सहायता से उत्पादन और कृशक समुदाय की आजीविका में वृद्धि द्वारा कृषि क्षेत्र में क्रांति सम्भव है.।